ये अव्यक्त इशारे

संस्कार मिलन की रास करो

6-04-2024

एक दो के स्नेही तब बनेंगे जबकि संस्कारों और संकल्पों को एक दो से मिलायेंगे। लेकिन ध्यान रहे आपकी स्थिति स्तुति के आधार पर नहीं हो। नहीं तो डगमग होते रहेंगे। कई बच्चे जब कुछ करते हैं तो उसके फल की इच्छा रखते हैं। स्तुति होती है तो स्थिति अच्छी रहती है, अगर कोई निन्दा कर देता है तो निधन्के बन जाते हैं, अपनी स्टेज को छोड़ एक दो से किनारा कर लेते हैं। लेकिन स्तुति-निंदा में समान स्थिति रहे तो संस्कार टकरायेंगे नहीं।

Perform the dance of harmonising sanskars.

You will be loving to one another when you harmonise sanskars and thoughts with one another. However, be cautious that your stage is not dependent on praise. Otherwise, you will continue to fluctuate. Many children want the fruit of whatever they do. If they are praised, their stage remains good, but if someone defames them, they become like orphans. They put aside their stage and move away from everyone. However, when you maintain equanimity in praise and defamation, there won't be any conflict of sanskars.